टुनटुनी चिड़िया

– प्रियंवद

एक थी टुनटुनी चिड़िया। उसके चार बच्चे भी थे। टुनटुनी चिड़िया रोज सुबह–सुबह उठ कर सबसे पहले अपने घोसले की सफाई करती थी। वह अपना घोसला बहुत सुन्दर तरीके से सजाना चाहती थी। वह रोज उड़कर दूर–दूर तक जाती ताकि वह बच्चों के लिए दाना और अपने घोसले को सजाने के लिए कुछ लेकर आ सके। कभी वह नर्म–मुलायम रेशम के धागे लेकर आती तो कभी कागज़ का कोई रंगीन टुकड़ा। लेकिन टुनटुनी चिड़िया के बच्चे दिन भर उधम मचाकर सभी चीज़ें बिखेर देते थे।

एक बार जब टुनटुनी चिड़िया बहुत ऊंचाई पर आकाश में उड़ रही थी तो उसे नीचे ज़मीन पर बहुत सुन्दर रंगीन नज़ारा दिखाई दिया। टुनटुनी चिड़िया झटपट नीचे उतरने लगी। वह बहुत जल्दी ही ज़मीन के करीब आ गयी। तब उसे पता चला कि जिसे वह रंगीन नज़ारा समझ रही थी वह तो फूलों का बगीचा था। जिसमें बहुत सारे सुन्दर–सुन्दर और रंग–बिरंगे फूल खिले हुए थे। टुनटुनी चिड़िया ने सोचा– अरे वाह! यहां तो इतने सारे सुन्दर सुन्दर फूल खिले हैं क्यों न कुछ फूल मैं अपने घोसले के लिए लेती जाऊं? बगीचे के ऊपर मंडराते हुए अभी वह यह बात सोच ही रही थी कि उसकी नज़र बगीचे के बीचों–बीच लगे एक बड़े से बोर्ड पर गयी। बोर्ड पर लिखा था– "फूल तोड़ना सख्त मना है"। यह देखते ही टुनटुनी चिड़िया उदास हो गयी। वह सोचने लगी– यहां तो इतने सारे फूल खिले हुए हैं अगर मैं इनमें से चार–छः फूल तोड़ भी लूंगी तो यहाँ कोई फूलों की कमी थोड़े ही न हो जायेगी। यही सोचकर वह थोड़ा और नीचे आयी। अभी वह पूरी तरह से नीचे आई भी नहीं थी कि भिन–भिन–भिन करते मधुमक्खियों के एक दस्ते ने उसके ऊपर धावा बोल दिया। टुनटुनी चिड़िया इस हमले से घबराकर फिर से ऊपर की ओर उड़ गयी।

काफ़ी ऊपर जाने के बाद उसने पीछे मुड़कर देखा कि अब मधुमक्खियां उसके पीछे नहीं हैं तो उसकी जान में जान आयी। टुनटुनी चिड़िया सोचने लगी कि आख़िर मधुमक्खियों ने मेरे ऊपर हमला क्यों किया? मैंने तो उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ा। बहुत देर तक सोचने के बाद उसने तय किया कि क्यों न चल कर बात की जाय। वह धीरे–धीरे फिर से नीचे आने लगी, मधुमक्खियों के नुकीले डंक से उसे डर भी लग रहा था। फिर भी वह सुन्दर–सुन्दर रंगीन फूलों के बारे में सोच कर नीचे उतर रही थी... टुनटुनी चिड़िया इस बार होशियारी से नीचे उतर रही थी। उसने थोड़ी दूर से ही मधुमक्खियों को देख लिया और गिन भी लिया– 1, 2, 3, 4...12 मधुमक्खियों के इस दस्ते में कुल 12 मधुमक्खियाँ हैं। ओहो! इनकी संख्या 12 है तभी इनका नाम दर्जन दस्ता है– टुनटुनी चिड़िया ने सोचा। एक दर्जन में तो 12 ही होते हैं न। टुनटुनी चिड़िया थोड़ा और नज़दीक आयी। जैसे ही वह फूलों के नज़दीक आयी...भिन भिन भिन... मधुमक्खियों की आवाज़ सुनायी देने लगी। लेकिन टुनटुनी चिड़िया इस बार तैयारी करके आयी थी। उसने अपनी चोंच में सफ़ेद रंग का एक पंख पकड़ रखा था। सफ़ेद रंग शांति और सुलह–समझौते का प्रतीक होता है। टुनटुनी चिड़िया के चोंच में सफ़ेद रंग का पंख देख कर मधुमक्खियों ने भिन भिन भिन करना बंद कर दिया।

अब न टुनटुनी चिड़िया आगे बढ़ रही थी न ही मधुमक्खियां। मधुमक्खियों ने जब यह देखा कि टुनटुनी चिड़िया आगे नहीं आ रही है तो दर्जन दस्ते की सेनापति टुनटुनी चिड़िया के पास आयी और उसने कड़क अंदाज़ में पूछा– क्या बात है? तुम यहां क्यों आई हो? टुनटुनी चिड़िया ने अपनी चोंच से सफ़ेद रंग का पंख निकाला और कहा कि मुझे अपने घोसले के लिए कुछ ज़रूरी सामान चाहिए जो इस बगीचे में मौजूद है।

सेनापति ने पूछा– क्या चाहिए?

मुझे बहुत सारे फूल चाहिए, टुनटुनी चिड़िया ने चहकते हुए कहा। सेनापति ने गुस्से में कहा– तुम्हे पता है कि इन्हीं फूलों से हमारा खाना मिलता है, इन्हीं फूलों के कारण हम शहद बनाती हैं, इन्हीं फूलों से हमारा जीवन चलता है और तुम इन्हें ही ले जाना चाहती हो?

अरे सेनापति जी, मुझे भी इन फूलों की बहुत ज़रूरत है..

टुनटुनी चिड़िया ने कहा। अच्छा! तुम्हें इनकी क्या ज़रूरत है? सेनापति मधुमक्खी ने सख्ती से पूछा।

टुनटुनी चिड़िया ने कहा– आपको पता ही होगा कि हम सभी चिड़िया पेड़ पर घोसला बना कर रहती हैं। मैंने भी एक–एक तिनका जोड़कर आम के एक पेड़ पर अपना घोसला बनाया है। मैं तो दिन भर दाने की तलाश में भटकती रहती हूं लेकिन घोसले में मेरे बच्चे अकेले ही रहते हैं और दिनभर धमा चौकड़ी मचाते हैं। शाम को जब मैं दाना लेकर घोसले में पहुंचती हूं तो किसी न किसी बच्चे को तिनका चुभा रहता है, कई बार तो उससे खून भी निकल रहा होता है। किसी तरह दाना खिला कर मैं उनकी मरहम–पट्टी करती हूं लेकिन अगले दिन फिर वही...किसी न किसी को तिनका चुभा ही रहता है, कहीं न कहीं चोट लगी ही रहती है।

अभी टुनटुनी चिड़िया बोल ही रही थी कि सेनापति मधुमक्खी ने मुंह बनाते हुए कहा– तो इसमें मैं क्या कर सकती हूँ ? तुम अपने बच्चों को समझाती क्यों नहीं?

अरे सेनापति जी, आप तो इतनी बड़ी अधिकारी हैं आप तो बच्चों का स्वभाव जानती ही हैं। डांटने पर वह थोड़ी देर चुप रहते हैं लेकिन थोड़ी ही देर में उनका चीं चीं चीं.. .फिर से शुरू हो जाता है और फिर मुझे तो दिन भर दाने की तलाश में बाहर रहना पड़ता है, बच्चे घर में अकेले रहते हैं तो आप सोच ही सकती हैं...

वह सब तो ठीक है लेकिन इसमें मैं क्या कर सकती हूँ? सेनापति की आवाज़ थोड़ी नरम पड़ गयी थी।

सेनापति की आवाज़ को नरम पड़ता हुआ देख कर टुनटुनी चिड़िया ने तपाक से कहा– बस मुझे फूल दे दीजिये। क्या इन फूलों से तुम्हारे बच्चे धमा चौकड़ी मचाना बंद कर देंगे? सेनापति ने पूछा।

अरे नहीं, मैं तो इन फूलों को अपने घोंसले के अन्दर अच्छी तरह से बिछा दूंगी जिससे उनको न तो तिनका चुभेगा न ही चोट लगेगी और मेरा घोंसला भी सुन्दर हो जाएगा– टुनटुनी चिड़िया ने कहा। लेकिन हमारे बगीचे से फूल तोड़ना सख्त मना है– वह बोर्ड तो तुमने देखा ही होगा, सेनापति ने कहा। टुनटुनी चिड़िया सोच में पड़ गयी... उसे कुछ सूझ नहीं रहा था...तभी सेनापति ने पूछा– अच्छा बताओ तुम्हें कितने फूल चाहिए? टुनटुनी चिड़िया ने बिना देर किये ही कहा– सौ...मुझे अलग–अलग रंगों के सौ फूल चाहिए।

सौ? ये सौ कितना होता है? सेनापति ने पूछा।

टुनटुनी चिड़िया फिर से सोच में पड़ गयी कि अब सेनापति को सौ के बारे में कैसे समझाए...उसने कहा– चलिए मैं बगीचे में फूलों को गिन कर बताती हूँ।

सेनापति ने कहा– ठीक है चलो लेकिन ध्यान रहे एक भी फूल तोड़ना नहीं है।

तो मुझे फूल कैसे मिलेगा? टुनटुनी चिड़िया ने पूछा।

तुम्हें तो फूल ही चाहिए न? बस तुम मेरे साथ चलो– सेनापति ने कहा। सेनापति और टुनटुनी चिड़िया बगीचे की ओर चल पड़े। उनके पीछे–पीछे भिन भिन भिन... करता दर्जन दस्ता भी आ रहा था। अब दर्जन दस्ते में ग्यारह सिपाही मधुमक्खियां ही थीं क्योंकि सेनापति तो टुनटुनी चिड़िया के साथ आगे–आगे चल रही थी। टुनटुनी चिड़िया सोच रही थी कि जब फूल तोड़ना ही नहीं है तो मुझे फूल मिलेंगे कैसे?

जब वे बगीचे में पहुंचे तब भी टुनटुनी चिड़िया सोच में पड़ी हुई थी और परेशान भी लग रही थी...सेनापति समझ गयी कि टुनटुनी चिड़िया किस बात से परेशान है। उसने कहा कि देखो हमारे बगीचे का नियम है कि कोई भी इसके फूल को तोड़ कर नहीं ले जा सकता लेकिन...जो फूल अपने आप टूट कर गिरे हुए हैं तुम उन्हें अपने साथ ले जा सकती हो।अयह सुनते ही टुनटुनी चिड़िया खुशी के मारे उछल पड़ी। तो सेनापति ने कहा– देखो यह सब मैं सिर्फ़ तुम्हारे छोटे–छोटे बच्चों के लिए कर रही हूं...अब बताओ सौ मतलब कितना होता है?

टुनटुनी चिड़िया ने वहां बिखरे हुए बहुत सारे फूल इकठ्ठा किये, फिर उसने दस–दस फूलों के दस अलग–अलग ढेर बनाये और सेनापति से पूछा कि बताओ एक ढेर में कुल कितने फूल हैं? सेनापति ने गिना– 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10 और कहा कि एक ढेर में 10 फूल हैं। अरे वाह! टुनटुनी चिड़िया ने कहा और फिर से पूछा कि अच्छा अब यह बताओ कि यदि हम दो ढ़ेरों को एक साथ मिला दें तो कुल कितने फूल हो जायेंगे? सेनापति ने फिर से गिनना शुरू किया 1,2,3...अभी सेनापति ने गिनना शुरू ही किया था कि टुनटुनी चिड़िया ने उसे रोक दिया और कहा कि एक ढेर में तो तुम पहले ही 10 फूल गिन चुकी हो तो अब दूसरे ढेर से एक–एक फूल मिलाते जाओ और गिनते जाओ। सेनापति ने ऐसा ही किया और कहा– यह तो 20 हो गये। इसी तरह से जब सेनापति ने सभी 10 ढ़ेरों को गिन लिया तो उसे पता चला कि 10–10 के 10 ढ़ेरों को यदि मिला दिया जाय तो 100 हो जाता है। जब 100 फूल पूरे हो गए तो टुनटुनी चिड़िया उन फूलों को साथ लेकर उड़ गयी और दर्जन दस्ते को धन्यवाद भी कहा। अब दर्जन दस्ते में फिर से 12 मधुमक्खियाँ हो गयी थीं...क्यों?

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ऊधमसिंह, उत्तराखण्ड नगर से जुड़े हैं)